SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत् महिला शिक्षिकाओं की आर्थिक स्थिति का अध्ययन (बालको नगर के विशेष संदर्भ में)

विमला सिंह, (Ph.D.), समाजशास्त्र विभाग,
सर्वेश कुमार सिंह, राजनीति विज्ञान विभाग,
श्री अग्रसेन कन्या महाविद्यालय, कोरबा, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
विमला सिंह, (Ph.D.), समाजशास्त्र विभाग,
सर्वेश कुमार सिंह, राजनीति विज्ञान विभाग,
श्री अग्रसेन कन्या महाविद्यालय,
कोरबा, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 26/04/2022
Revised on : -----
Accepted on : 03/05/2022
Plagiarism : 05% on 26/04/2022

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 5%

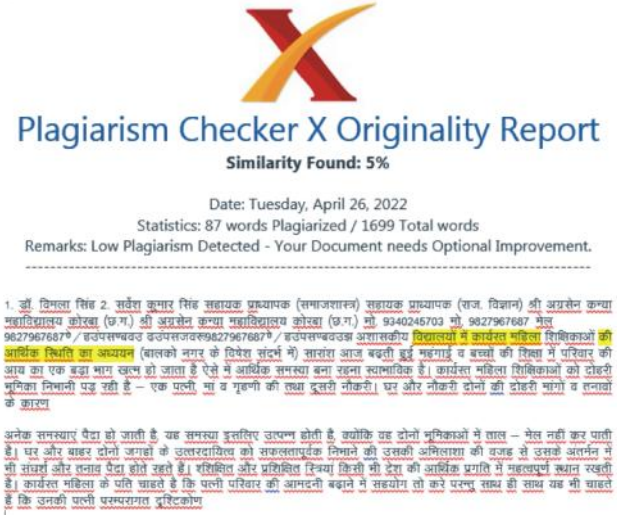

Date: Tuesday, April 26, 2022
Statistics: 87 words Plagiarized / 1699 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

1. डॉ. विमला सिंह 2. सर्वेश कुमार सिंह सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र) सहायक प्राध्यापक (राज. विज्ञान) श्री अग्रसेन कन्या महाविद्यालय कोरबा (छ.ग.) श्री अग्रसेन कन्या महाविद्यालय कोरबा (छ.ग.) मो. 9340245703 मो. 9827967687 मेल 9827967687॰/हउपसण्बवउ दउपसजवरू9827967687॰/हउपसण्बवउझ अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षिकाओं की आर्थिक स्थिति का अध्ययन (बालको नगर के विशेष संदर्भ में) सारांश आज बढ़ती हुई महंगाई व बच्चों की शिक्षा में परिवार की आय का एक बड़ा भाग खत्म हो जाता है ऐसे में आर्थिक समस्या बना रहना स्वाभाविक है। कार्यरत महिला शिक्षिकाओं को दोहरी भूमिका निभानी पड़ रही है – एक पत्नी, मां व गृहणी की तथा दूसरी नौकरी। घर और नौकरी दोनों की दोहरी मांगों व तनावों के कारण

अनेक समस्याएं पैदा हो जाती है, यह समस्या इसलिए उत्पन्न होती है, क्योंकि वह दोनों भूमिकाओं में ताल – मेल नहीं कर पाती है। घर और बाहर दोनों जगहों के उत्तरदायित्व को सफलतापूर्वक निभाने की उसकी अभिलाशा की वजह से उसके अंतर्मन में भी संघर्ष और तनाव पैदा होते रहते है। शशिक्षित और प्रशिक्षित स्त्रियां किसी भी देश की आर्थिक प्रगति में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। कार्यरत महिला के पति चाहते है कि पत्नी परिवार की आमदनी बढ़ाने में सहयोग तो करे परन्तु साथ ही साथ यह भी चाहते है कि उनकी पत्नी परम्परागत दृष्टिकोण

शोध सार

आज बढ़ती हुई महंगाई व बच्चों की शिक्षा में परिवार की आय का एक बड़ा भाग खत्म हो जाता है ऐसे में आर्थिक समस्या बना रहना स्वाभाविक है। कार्यरत् महिला शिक्षिकाओं को दोहरी भूमिका निभानी पड़ रही है – एक पत्नी, मां व गृहणी की तथा दूसरी नौकरी। घर और नौकरी दोनों की दोहरी मांगों व तनावों के कारण अनेक समस्याएं पैदा हो जाती है, यह समस्या इसलिए उत्पन्न होती है, क्योंकि वह दोनों भूमिकाओं में ताल – मेल नहीं कर पाती है। घर और बाहर दोनों जगहों के उत्तरदायित्व को सफलतापूर्वक निभाने की उसकी अभिलाषा की वजह से उसके अंतर्मन में भी संघर्ष और तनाव पैदा होते रहते हैं।

मुख्य शब्द

महिला शिक्षिका, अशासकीय विद्यालय, आर्थिक स्थिति.

''शिक्षित और प्रशिक्षित स्त्रियां किसी भी देश की आर्थिक प्रगति में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। कार्यरत् महिला के पति चाहते है कि पत्नी परिवार की आमदनी बढ़ाने में सहयोग तो करे परन्तु साथ ही साथ यह भी चाहते हैं कि उनकी पत्नी परम्परागत दृष्टिकोण अपनाये और यहां तक कि अपने अर्जित किए हुए धन पर भी अपना अधिकार नहीं जताये । वह नौकरी करने के साथ – साथ घर में एक ''आदर्श पत्नी'' की तरह उनकी सारी सुख – सुविधाओं का ध्यान रखे। जीवनसाथी के रूप में समान अधिकारों की बात भी दिमाग में नहीं लाये। परिवार के बुजुर्गों और रिश्तेदार भी अपनी शिक्षित बेटी, पत्नि और बहू का काम करना अच्छा समझने लगे हैं, चाहते हैं कि वे परिवार की आय में बढ़ोत्तरी करके

उसकी मदद करें।''

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सरकार ने इस बात पर बल दिया कि शिक्षिकाओं की आर्थिक, सामाजिक और व्यावसायिक दशाओं को सुधारे बिना शिक्षा का उत्तरदायित्व अपूर्ण ही रहेगा। देश के सारे शिक्षाशास्त्री, विद्वान, राजनीतिज्ञ और प्रशासन यह स्वीकार करते हैं कि देश जिस संकटकाल से गुजर रहा है, उसमें शिक्षिका ही उसे सबलता प्रदान कर सकती है। जब तक महिला शिक्षिकाओं की समस्या दूर नहीं की जायेगी, यह अपना कार्य सही ढंग से नहीं कर सकेगी।

आधुनिक काल में आर्थिक उत्पादन में महिलाएं पुरूषों के साथ–साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है। आज महिला शिक्षिका पुरूषों के समानांतर या उससे कहीं अत्यधिक श्रम करने के बावजूद निरंतर उपेक्षा एवं व्यक्तित्वहीनता की शिकार क्यों बनी हुई है। वह अपने अधिकार को प्राप्त करने में असहाय होकर पुरूषों पर आश्रित क्यों हो चली है? कारण स्पष्ट है कि शिक्षिकाओं का सामाजिक पिछड़ापन एवं पुरूषों की तुलना में महिला शिक्षिकाओं के साथ शोषित व सौतेलापन का व्यवहार है।

महिला शिक्षिकाओं का वेतन संतोषप्रद नही है तथा विभिन्न राज्यों की पृथक नीति है। देश मे शिक्षिकाओं का आर्थिक स्तर निम्न है। सरकारी शैक्षणिक संस्थाओं में कार्यरत् महिला शिक्षिकाओं की आर्थिक स्तर अच्छा ही है परंतु निजी शैक्षणिक संस्थाओं में कार्यरत् महिला शिक्षिकाओं से लिखाया कुछ और जाता हैं और दिया कुछ जाता हैं। देश के अनेक राज्यों में निजी शैक्षणिक संस्थाओं की अधिकता है, जिसके कारण उनका शोषण स्वाभाविक है। उनके लिए न तो पेंशन योजना है और न ही उन्हें चिकित्सा भत्ता मिलता है।

अध्ययन विधि एवं उत्तरदाताओं का चयन

प्रस्तुत शोध पत्र अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षिकाओं की आर्थिक स्थिति का अध्ययन विषय से संबधित संकलित तथ्यों के विश्लेषण पर आधारित है। प्रस्तुत शोध पत्र में कोरबा जिले के बालकोनगर के अशासकीय 10 विद्यालयों को लिया गया है तथा 120 महिला शिक्षिकाओं का चुनाव, उद्देश्यपूर्ण निर्देशन के द्वारा किया गया है। आर्थिक स्थिति के अध्ययन के अंतर्गत नौकरी प्रारंभ करने, नौकरी करने के कारण, आय को स्वयं रखना, आय को स्वेच्छा से देना, स्वेच्छा से न देने के कारण, वर्तमान मासिक वेतन से संतुष्टि आदि का सर्वेक्षण कर प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण किया गया है।

नौकरी प्रारंभ करना

आज के युग में महिलाओं द्वारा नौकरी करना एक सम्मान की बात है, क्योंकि उनके कार्यरत रहने पर परिवार के आय में वृद्धि होती है। मध्यम वर्ग के परिवार में नौकरी करना आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाये रखने के लिए आवश्यक है। वही उच्च वर्ग की महिलाएं अपने शिक्षा और समय का सदुपयोग करने के लिए नौकरी करना प्रारंभ कर रही है।

तालिका क्रमांक 01: उत्तरदाताओं द्वारा नौकरी प्रारंभ करना

क्रमांक	प्रारंभ करना	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	विवाह के पूर्व	50	41.7
2.	विवाह के बाद से	70	58.3
	कुल योग	120	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 58.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा विवाह के बाद से नौकरी करना नौकरी प्रारंभ किया है क्योंकि विवाह के बाद आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता अधिक होती है। 41.7 प्रतिशत उत्तरदाता विवाह के पूर्व से नौकरी कर रहे है।

विवाह के बाद नौकरी करने के कारण

तालिका क्रमांक 2: उत्तरदाताओं के नौकरी करने के कारण

क्रमांक	कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	आर्थिक सहयोग के लिये	65	54.1
2.	स्मय के सदुपयोग के लिये	22	18.4
3.	समाजिक कल्याण के लिये	09	07.5
4.	विशेष रूचि के कारण	24	20.0
	कुल योग	120	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 54.1 प्रतिशत उत्तरदाता परिवार के आर्थिक सहयोग करने के लिए नौकरी प्रारंभ किया क्योंकि विहा के बाद खर्च बढ़ जाते है, 20 प्रतिशत उत्तरदाता विशेष रूचि के कारण, 18.4 प्रतिशत उत्तरदाता समय के सदुपयोग के लिए, 7.5 प्रतिशत उत्तरदाता सामाजिक कल्याण के लिए नौकरी करते है।

आय को स्वयं रखना

महिला द्वारा नौकरी करने को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है, पर जब स्वयं अर्जित आय को रखने की बात आती है तो आपसी तनाव की समस्या आती है। उन्हें आय को स्वयं रखने का अधिकार नही होता है, उन्हें अपनी सारी आय पति अथवा सास–ससुर को देनी पड़ती है और जहां महिला ने अपने अर्जित धन पर अपना अधिकार जताने की कोशिश की, वहां कलह उठ खड़ा होता है क्योंकि पति अथवा परिवार के दूसरे सदस्य इस बात के लिए बिल्कुल तैयार नही होते हैं।

तालिका क्रमांक 03: उत्तरदाताओं द्वारा आय को रखना

कमांक	प्रारंभ करना	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	45	37.5
2.	नहीं	75	62.5
	कुल योग	120	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 62.5 प्रतिशत उत्तरदाता अपने आय को स्वयं नही रखते है क्योंकि परिवार के सदस्य इस बात को पसंद नही करते हैं, 37.5 प्रतिशत आय को स्वयं रखते है।

आय को स्वेच्छा से देना

तालिका क्रमांक 04: उत्तरदाताओं द्वारा आय को स्वेच्छा से देना

क्रमांक	स्वेच्छा से देना	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	40	33.3
2.	नहीं	80	66.7
	कुल योग	120	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 66.7 प्रतिशत उत्तरदाता स्वेच्छा से आय नहीं देती, क्योंकि इनका मानना है कि अपनी कुछ निजी आवश्यकता होती है जिसके कारण वह आय को स्वयं के पास रखना चाहती है, पर न चाहते हुए भी देना पड़ता है, जबकि 33.3 प्रतिशत स्वेच्छा से दे देती है।

स्वेच्छा से आय न देने के कारण

तालिका क्रमांक 5: स्वेच्छा से न देने के कारण

क्रमांक	कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	निजी आवश्यकता	32	26.6
2.	पति द्वारा गलत प्रयोग के कारण (शराब आदि)	23	19.2
3.	भविष्य की चिंता	45	37.6
4.	स्वाभिमान	20	16.6
	कुल योग	120	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 37.6 प्रतिशत उत्तरदाता भविष्य की चिंता के कारण स्वेच्छा से आय नहीं देना चाहती है क्योंकि बच्चों की शिक्षा व विवाह की चिंता बनी रहती है, 26.6 प्रतिशत उत्तरदाता निजी आवश्यकता के कारण, 19.2 प्रतिशत उत्तरदाता पति द्वारा गलत प्रयोग के कारण (शराब आदि), 16.6 प्रतिशत उत्तरदाता अपने स्वाभिमान के कारण नहीं देना चाहते हैं।

वेतन से संतुष्टि

कार्यरत् सदस्य अगर अपने वेतन से संतुष्ट है तो वह हर काम को लगन एवं निष्ठा से करती है, कार्य को लगन से करने पर अच्छे परिणाम निकलते है। वेतन संतुष्टि का प्रभाव परिणाम पर पड़ता है, अतः वेतन कार्यरत सदस्यों द्वारा किए गये कार्यों का प्रतिफल है।

कोई भी सदस्य अपने वेतन से तभी संतुष्टि का अनुभव करता है जबकि उसके स्वयं तथा परिवार की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति साथ–साथ समाज में उसकी प्रतिष्ठा एवं रहन–सहन का स्तर, अच्छा बना रहे। चूंकि कार्यरत सदस्यों का वेतन उसके जीवन स्तर को निर्धारित करते समय उसके आय के गुण, शिक्षा, पद, प्रशिक्षण, अनुभव आदि का समुचित ध्याान रखा जाना चाहिए।

यदि संस्था के सदस्य अपने वेतन से असंतुष्ट है तो इससे संस्था के परिणाम पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। अतः संस्था को अपने उद्देश्यों की प्राप्ति करने के लिए आवश्यक है कि कार्यरत् सदस्यों को वेतन से संतुष्टि का

अनुभव कराये।

तालिका क्रमांक 04: उत्तरदाताओं का वर्तमान मासिक वेतन से संतुष्टि

क्रमांक	संतुष्टि	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	45	37.5
2.	नहीं	75	62.5
	कुल योग	120	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 62.5 प्रतिशत उत्तरदाता वर्तमान मासिक वेतन से संतुष्टि नहीं है, क्योंकि इनका मानना है कि अशासकीय विद्यालयों में वेतन बहुत कम दिया जाता है, जबकि 37.5 प्रतिशत उत्तरदाता अपने वेतन से संतुष्ट है।

राष्ट्रीय महिला आयोग की रिपोर्ट के अनुसार आजादी के 75 वर्षों के बाद भी महिला शिक्षिकाओं की स्थिति दयनीय बनी हुई है। इनकी आर्थिक स्थिति में कोई विशेष बदलाव नहीं आया है। इसके लिए योजनाओं के क्रियान्वय में त्रुटि होने को स्वीकार किया है। यद्यपि सरकार ने समान काम के लिए समान वेतन देने का प्रावधान किया है, किन्तु अशासकीय विद्यालयों में ऐसा नहीं है। अक्सर शिकायते सुनने में आती है कि स्त्रियों को पुरूषों से कम वेतन दिया जाता है।

सुझाव

1. परम्पराओं से जकड़े पुरूषों और पतियों के मन में कुछ ऐसी धारणाएं और भावनाएं गहरे रूप से बैठी हैं जिन्हें बदलना होगा। पतियों का यह भ्रम भी दूर करना होगा कि आवश्यकता पड़ने पर पुरूषों को घर के कार्यों में रूचि लेना और सहयोग देना उन्हें समाज की नजरों में गिराता नहीं हैं।
2. कार्यरत् शिक्षिकाएं जो कि एकाकी परिवार की है, उन्हें अपनी अनुपस्थिति में हर समय बच्चों की चिन्ता बनी रहती है। ऐसी महिलाओं के बच्चों के लिए 'शिशु संरक्षण गृह' खोले जाये, ताकि कार्यरत महिला निश्चित होकर कार्य संस्थाओं में कार्य कर सके।
3. घर के बाहर काम करने पर अब स्त्री के कार्यक्षेत्र दोहरे हो गए हैं, तो उस पर बहस की जानी चाहिए और दोनों क्षेत्रों में सामंजस्य खोजने के लिए विशेष प्रयत्न किये जाने चाहिए।
4. महिला शिक्षिकाओं की समस्या को एक सघन अभियान के रूप में ले। इसके लिए आवश्यक है जनजागृति, जनसहयोग और जनसहभागिता को प्राथमिकता के आधार पर तैयार करें। इसके लिए अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों में दृढ इच्छा शक्ति जागृत करें । पिछले वर्षों में हालाकि कुछ प्रयास हुए हैं, लेकिन श्रेष्ठ व कुशल प्रयास की अभी भी प्रतिक्षा है।

संदर्भ सूची

1. कपूर प्रमिला, *कामकाजी भारतीय नारी,* राज्यपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट, दिल्ली पृ. 38, 1976।
2. गुप्ता सुभाषचन्द्र, *कार्यशील महिलाएं एवं भारतीय समाज,* अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, पृ. 20, 2004।
3. भिलाई ए.आई.एल.ओ. रिपोर्ट, पृ. 25, 1964।
4. *कुरूक्षेत्र,* अनुसंधान अधिकारी जनसाधन अनुसंधान संस्थान, आई.पी.एस्टेट एम.जी. मार्ग नई दिल्ली, नवंबर 2001।
5. विभागीय वेबसाइट जिला कोरबा।

****